

गणित

कक्षा 9 के लिए पाठ्यपुस्तक



0963



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0963 – गणित

कक्षा 9 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 81-7450-505-9

प्रथम संस्करण

मार्च 2006 फाल्गुन 1927

पुनर्मुद्रण

अक्तूबर 2006, अक्तूबर 2007,

जनवरी 2009, जनवरी 2010,

जनवरी 2011, जनवरी 2012,

दिसंबर 2012, फ़रवरी 2014,

दिसंबर 2015, दिसंबर 2016,

दिसंबर 2017, दिसंबर 2018

और अगस्त 2019

संशोधित संस्करण

नवंबर 2022 अग्रहायण 1944

PD 10T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद् 2006, 2022

₹ 155.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम.
पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद
मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित
तथा अमर उजाला लिमिटेड, सी-21,
सैक्टर-59, नोएडा - 201 301 (उ.प्र.) द्वारा
मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस

श्री अरविंद मार्ग

नयी दिल्ली 110 016

फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड

हेली एक्सटेशन, होस्टेकेरे

बनाशकरी III स्टैज

बैंगलुरु 560 085

फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन

डाकघर नवजीवन

अहमदाबाद 380 014

फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस

निकट: धनकल बस स्टॉप

पनिहटी

कोलकाता 700 114

फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स

मालीगांव

गुवाहाटी 781 021

फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : अनूप कुमार राजपूत

मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरुण चितकारा

मुख्य व्यापार प्रबंधक : विपिन दिवान

मुख्य संपादक (प्रभारी) : विज्ञान सुतार

संपादक : रेखा अग्रवाल

उत्पादन सहायक : प्रकाश वीर सिंह

चित्रांकन और आवरण

डिजिटल एक्सप्रेसन

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धान्त किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाये हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मजबूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केन्द्रित व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नये ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों व स्रोतों की अनेदखी किये जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिये ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक जिन्दगी और कार्यशैली में काफी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितनी वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिये नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिये पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिये उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिये बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् विज्ञान एवं गणित के सलाहकार समूह के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर जयंत विष्णु नारलीकर और इस पुस्तक की मुख्य सलाहकार इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की प्रोफ़ेसर पी. सिंक्लेयर की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने

योगदान दिया; इस योगदान को संभव बनाने के लिये हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम विशेष रूप से माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफेसर मृणाल मिरी और प्रोफेसर जी. पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित राष्ट्रीय निरीक्षण समिति द्वारा प्रदत्त बहुमूल्य समय एवं योगदान के लिए भी कृतज्ञ हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरन्तर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों व सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

नयी दिल्ली
20 दिसंबर 2005

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन

कोविड-19 महामारी को देखते हुए, विद्यार्थियों के ऊपर से पाठ्य सामग्री का बोझ कम करना अनिवार्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में भी विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री का बोझ कम करने और रचनात्मक नज़रिए से अनुभवात्मक अधिगम के अवसर प्रदान करने पर जोर दिया गया है। इस पृष्ठभूमि में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने सभी कक्षाओं में पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित करने की शुरुआत की है। इस प्रक्रिया में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा पहले से ही विकसित कक्षावार सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखा गया है।

पाठ्य सामग्रियों के पुनर्संयोजन में निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है —

- एक ही कक्षा में अलग-अलग विषयों के अंतर्गत समान पाठ्य सामग्री का होना;
- एक कक्षा के किसी विषय में उससे निचली कक्षा या ऊपर की कक्षा में समान पाठ्य सामग्री का होना;
- कठिनाई स्तर;
- विद्यार्थियों के लिए सहज रूप से सुलभ पाठ्य सामग्री का होना, जिसे शिक्षकों के अधिक हस्तक्षेप के बिना, वे खुद से या सहपाठियों के साथ पारस्परिक रूप से सीख सकते हैं;
- वर्तमान संदर्भ में अप्रासंगिक सामग्री का होना।

वर्तमान संस्करण, ऊपर दिए गए परिवर्तनों को शामिल करते हुए तैयार किया गया पुनर्संयोजित संस्करण है।

© NCERT
not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

विज्ञान एवं गणित के सलाहकार समूह के अध्यक्ष

जयंत विष्णु नारलीकर, इमीरिटस प्रोफेसर, अध्यक्ष, आई.यू.सी.ए.ए., गणेशखिंड, पूना विश्वविद्यालय, पूना।

मुख्य सलाहकार

पी. सिंकलेयर, प्रोफेसर, विज्ञान विद्यापीठ, इ.गा.रा.मु.वि., नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

हुकुम सिंह, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम., रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

सदस्य

अंजली लाल, पी.जी.टी. (गणित), डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सेक्टर-14, गुडगांव

अंजू निरूला, पी.जी.टी. (गणित), डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पुष्पांजली इंकलेव, पीतम पुरा, दिल्ली

उदय सिंह, लेक्चरर, डी.ई.एस.एम., रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

ए.के. वझलवार, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम., रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

एस. वेंकटरमन, लेक्चरर, विज्ञान विद्यापीठ, इ.गा.रा.मु.वि. नयी दिल्ली

जी.पी. दीक्षित, प्रोफेसर, गणित और खगोलिकी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

के.ए.एस.एस.वी. कामेश्वर राव, लेक्चरर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

महेन्द्र आर. गजरे, पी.जी.टी., अतुल विद्यालय, अतुल, जिला वलसाद

महेन्द्र शंकर, लेक्चरर (एस.जी.) (सेवानिवृत्त), रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

रामा बालाजी, टी.जी.टी. (गणित), के.वी. मेग और केन्द्र, सेंट जान्स रोड, बंगलौर

वेद डुडेजा, उप-प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त), राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय, सैनिक विहार, दिल्ली

संजय मुद्गल, लेक्चरर, सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

शशिधर जगदीशन, शिक्षक और सदस्य, गवरनिंग कॉउंसिल, सेन्टर फॉर लर्निंग, बंगलौर

हिन्दी रूपांतरकर्ता

जी.पी. दीक्षित, प्रोफेसर, गणित और खगोलिकी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

महेन्द्र शंकर, लेक्चरर (एस.जी.) (सेवानिवृत्त), रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

हरीश्वर प्रसाद सिन्हा, सी-210, राजाजी पुरम, लखनऊ

सदस्य-समन्वयक

राम अवतार, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम., रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली (दिसम्बर 2005 तक)

आर.पी. मौर्य, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम., रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली (जनवरी 2006 से)

भारत का संविधान उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक ¹[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और ²[राष्ट्र की एकता
और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता
बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख
26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्वारा इस संविधान को
अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

आभार

परिषद् पाठ्यपुस्तक की समीक्षा के लिए आयोजित कार्यशाला के निम्नलिखित प्रतिभागियों का उनके बहुमूल्य योगदान के लिए हार्दिक आभार प्रकट करती है: ए. के. सक्सैना, प्रोफेसर (सेवानिवृत्त), लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ; सुनील बजाज, एच.ओ.डी. (गणित), एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुडगाँव; के. एल. आर्य, प्रोफेसर (सेवानिवृत्त), डी.ई.एस.एम., एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; बंदिता कालरा, लेक्चरर, सर्वोदय कन्या विद्यालय, विकास पुरी, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, नई दिल्ली; जगदीश सिंह, पी.जी.टी., सैनिक स्कूल, कपूरथला; पी. के. बग्गा, टी.जी.टी., एस.बी.वी., सुभाष नगर, नई दिल्ली; आर.सी. महाना, टी.जी.टी., केन्द्रीय विद्यालय, संबलपुर; डी.आर. खंडवे, टी.जी.टी., जे.एन.वी. दुधनोई, गोलपाड़ा; एस.एस. चट्टोपाध्याय, एसिसटेंट मास्टर, बिधान नगर गवर्नमेंट हाई स्कूल, कोलकाता; एन.ए. सुजाथा, टी.जी.टी., के.वी. वास्को न. 1, गोवा; अकिला सहदेवन, टी.जी.टी., के.वी. मीनांबक्कम, चेन्नई; एस.सी. राऊतो, टी.जी.टी., सेंट्रल स्कूल फॉर तिब्बतनस, मसूरी; सुनील पी. जेवियर, टी.जी.टी., एन.वी., नेरीयामंलगम, एरनाकुलम; अमित बजाज, टी.जी.टी., सी.आर.पी.एफ पब्लिक स्कूल, रोहिणी, दिल्ली; आर.के. पाण्डे, टी.जी.टी., डी.एम. स्कूल, आर.आई.ई. भोपाल; वी. माधवी, टी.जी.टी., संस्कृति स्कूल, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली; जी. श्री हरि बाबू, टी.जी.टी., जे.एन.वी. कागज़नगर, अदिलाबाद।

परिषद् उन विषय-विशेषज्ञों, शिक्षकों एवं विभागीय सदस्यों की भी आभारी है जिन्होंने इस पुस्तक के हिन्दी संस्करण की समीक्षा की और इसे अधिक उपयोगी बनाने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिए: नन्दकिशोर वर्मा, लेक्चरर, एच.ई.एस.-II, गणित विभाग, राज्य शैक्षिक अनु. एवं प्रशि. परि., हरियाणा, गुडगाँव; रविन्द्र सिंह पंवार, पी.जी.टी., एम.बी.डी.ए.वी. सीनियर सै. स्कूल, यूसुफ सराय, नई दिल्ली; अजय कुमार सिंह, टी.जी.टी., रामजस सी.सै. स्कूल, न. 3, कूचा नटवा, चाँदनी चौक, दिल्ली; सविता गर्ग, पी.जी.टी., सर्वोदय कन्या विद्यालय, चांद नगर, नई दिल्ली; सुधा गुप्ता, टी.जी.टी., सर्वोदय कन्या विद्यालय, अवन्तिका, रोहिणी, दिल्ली; राजकुमार भारद्वाज, टी.जी.टी., राजकीय माध्यमिक बाल विद्यालय, ए-ब्लाक, सुल्तानपुरी, दिल्ली; अशोक कुमार गुप्ता, टी.जी.टी., राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, एस.यू. ब्लाक, पीतमपुरा, दिल्ली; पी.के. तिवारी, सहायक आयुक्त (सेवानिवृत्त), केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली; आर.पी. मौर्य, (समन्वयक) प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम., एन.सी.ई.आर.टी.।

परिषद् पुस्तक विकास की प्रक्रिया में सहयोग के लिए एम. चन्द्रा, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, डी.ई.एस.एम., एन.सी.ई.आर.टी. की विशेष रूप से आभारी है।

परिषद् कंप्यूटर प्रभारी, दीपक कपूर; डी.टी.पी. ऑपरेटर, नरेश कुमार; कॉपी संपादक, प्रगति भारद्वाज और एल.आर. भारती; प्रूफ रीडर, योगिता शर्मा के प्रयासों के प्रति भी आभार प्रकट करती है। ए.पी.सी. कार्यालय, डी.ई.एस.एम. का प्रशासन, प्रकाशन प्रभाग और एन.सी.ई.आर.टी. सचिवालय के योगदान भी सराहनीय हैं।

परिषद्, इस संस्करण के पुनर्संयोजन के लिए पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक और विषय सामग्री के विश्लेषण हेतु दिए गए महत्वपूर्ण सहयोग के लिए एन.सी.ई.आर.टी. के विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के सदस्यों— आशुतोष वझलवार, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; टी.पी. शर्मा, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली और राहुल सोफट, पी.जी.टी., एयर फोर्स गोल्डन जूबली स्कूल, सुब्रतो पार्क, नयी दिल्ली; गुरप्रीत भटनागर, रिसोर्स पर्सन, सी.बी.एस.ई. के प्रति आभार व्यक्त करती है।

विषय सूची

आमुख	iii
पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन	v
1. संख्या पद्धति	1
1.1 भूमिका	1
1.2 अपरिमेय संख्याएँ	6
1.3 वास्तविक संख्याएँ और उनके दशमलव प्रसार	10
1.4 वास्तविक संख्याओं पर संक्रियाएँ	17
1.5 वास्तविक संख्याओं के लिए घातांक-नियम	24
1.6 सारांश	27
2. बहुपद	29
2.1 भूमिका	29
2.2 एक चर वाले बहुपद	29
2.3 बहुपद के शून्यक	34
2.4 बहुपदों का गुणनखंडन	37
2.5 बीजीय सर्वसमिकाएँ	42
2.6 सारांश	49
3. निर्देशांक ज्यामिति	50
3.1 भूमिका	50
3.2 कार्तीय पद्धति	54
3.3 सारांश	63
4. दो चरों वाले रैखिक समीकरण	64
4.1 भूमिका	64
4.2 रैखिक समीकरण	64

4.3	रैखिक समीकरण का हल	67
4.4	सारांश	69
5.	यूक्लिड की ज्यामिति का परिचय	70
5.1	भूमिका	70
5.2	यूक्लिड की परिभाषाएँ, अभिगृहीत और अभिधारणाएँ	72
5.3	सारांश	80
6.	रेखाएँ और कोण	82
6.1	भूमिका	82
6.2	आधारभूत पद और परिभाषाएँ	83
6.3	प्रतिच्छेदी रेखाएँ और अप्रतिच्छेदी रेखाएँ	85
6.4	कोणों के युग्म	86
6.5	एक ही रेखा के समांतर रेखाएँ	92
6.6	सारांश	96
7.	त्रिभुज	97
7.1	भूमिका	97
7.2	त्रिभुजों की सर्वांगसमता	97
7.3	त्रिभुजों की सर्वांगसमता के लिए कसौटियाँ	100
7.4	एक त्रिभुज के कुछ गुण	110
7.5	त्रिभुजों की सर्वांगसमता के लिए कुछ और कसौटियाँ	115
7.6	सारांश	120
8.	चतुर्भुज	121
8.1	समांतर चतुर्भुज के गुण	121
8.2	मध्य-बिंदु प्रमेय	130
8.3	सारांश	134

9. वृत्त	135
9.1 जीवा द्वारा एक बिन्दु पर अंतरित कोण	135
9.2 केन्द्र से जीवा पर लम्ब	137
9.3 समान जीवाएँ और उनकी केन्द्र से दूरियाँ	138
9.4 एक वृत्त के चाप द्वारा अंतरित कोण	142
9.5 चक्रीय चतुर्भुज	145
9.6 सारांश	150
10. हीरोन का सूत्र	151
10.1 त्रिभुज का क्षेत्रफल - हीरोन के सूत्र द्वारा	151
10.2 सारांश	156
11. पृष्ठीय क्षेत्रफल और आयतन	157
11.1 एक लंब वृत्तीय शंकु का पृष्ठीय क्षेत्रफल	157
11.2 गोले का पृष्ठीय क्षेत्रफल	162
11.3 लम्ब वृत्तीय शंकु का आयतन	166
11.4 गोले का आयतन	170
11.5 सारांश	173
12. सांख्यिकी	174
12.1 आंकड़ों का आलेखीय निरूपण	174
12.2 सारांश	190
परिशिष्ट 1 - गणित में उपपत्तियाँ	191
A1.1 भूमिका	191
A1.2 गणितीय रूप से स्वीकार्य कथन	192
A1.3 निगमनिक तर्कण	196
A1.4 प्रमेय, कंजेक्चर और अभिगृहीत	199

A1.5	गणितीय उपपत्ति क्या है?	204
A1.6	सारांश	211
परिशिष्ट 2 – गणितीय निदर्शन का परिचय		212
A2.1	भूमिका	212
A2.2	शब्द समस्याओं का पुनर्विलोकन	213
A2.3	कुछ गणितीय निदर्श	218
A2.4	निदर्शन प्रक्रम, इसके लाभ और इसकी सीमाएँ	226
A2.5	सारांश	230
उत्तर/संकेत		231–245